ISSN: 2347-2723



REVIEW OF LITERATURE



'महासमर' उपन्यास की पृष्ठभूमि में मानवीय मूल्य

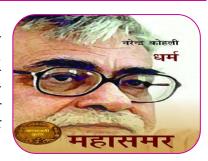
मंजू अरोरा

अनुसंधित्सु- कला एवं भाषा विभाग,लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी , फगवाड़ा, पंजाब.

IMPACT FACTOR: 3.3754(UIF)

सारांश:

प्राणी जगत में श्वास लेता मनुष्य अपने विवेक से और मानवीयता के गुण-बोध से अन्यों जीवों से पृथक सत्ता रखता है | साहित्य जगत के मूर्धन्य साहित्यकार एवं मुख्यत: डॉ. नरेंद्र कोहली अपने महा-उपन्यास 'महासमर' के घटना क्रमों, परिस्थितियों एवं चरित्रों से मानवीय मूल्यों की अपरिहार्यता को जागृत और पुनर्जागृत करने का प्रयास सा करते हैं | मूल्य जीवन को गित देते हैं, और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं | ऋग्वैदिक काल से यह विषय चिरंतन है | समसामयिक सन्दर्भों में क्षरित होते समाज के परिदृश्यों में, मानवीय मूल्य और उनका महत्त्व और भी बढ़ जाता है |



बीजशब्द: श्रेष्ठता, मानवीयता, उच्च-संवेदनाएं , बौद्धिक शक्तियां, पौराणिक, सात्विक गुण , मानवीय दृष्टिकोण |

भूमिका:

भारतीय साहित्य में महान रचनाकारों ने मानवीय मूल्यों पर अपने अमूल्य विचारों से मानव समाज को दिशा निर्देश दिए हैं | डॉ.नरेंद्र कोहली द्वारा रचित 'महासमर' भी एक ऐसा महा उपन्यास है, जो जीवन की श्रेष्ठता को कहता है, जीवन की सतत साधना, उसका प्रकाश, मानव को देवत्व की आभा से भर कर उसे मानवीयता के गुणों और मूल्यों से न केवल परिचित कराता है, वरन उसे कार्य रूप में परिणित करने की ओर अग्रसर भी करता है | मनुष्य इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है | प्रभु ने उसे विचारने, समझने और निर्णय की योग्यता दी है, जो उसे अन्य प्राणियों से पृथक करती है | कहते हैं – 'पश्यतीति पशु:' अर्थात केवल देखने वाला पशु है, जिसमें अनुभूति की योग्यता नही है | लेकिन जिसमें उच्च सर्वेदनाएं हैं, बौद्धिक शक्तियां हैं, वह मनुष्य है | मनुष्य में लिलत कलाओं का समावेश है | किसी भी समाज की आधारिशला उसके मानवीय मूल्य होते हैं | सामाजिक होने के कारण मनुष्य को सेवा, शांति, परमार्थ, प्रेम, मधुरता, दृढता, एकता, स्वतंत्रता, सत्य, निर्भयता, समता, सहयोग, विश्वंधुत्व आदि मानवीय मूल्यों का विकास अपने अंदर करना ही पड़ेगा | मानवीय मूल्यों से संपन्न व्यक्ति ही सुदृढ़ राष्ट्र और सशक्त समाज की रचना करसकता है |

विश्लेषण:

हमारी पौराणिक एवं वैदिक संस्कृति आदि काल से मानवतावादी दृष्टिकोण देती आई है | हमारे जीवन मूल्यों को निर्देशित करते मन्त्र हमें इस दिशा की ओर ही प्रेरित करते हैं | उदहारण हेतु प्रस्तुत है गायत्री मन्त्र:-

> "ॐ भूर्भव: स्व: तिस्वितुर्वर्येनियम भर्गो देवस्य धी महि धीयो यो न: प्रचोदयात |"

अर्थात : 'प्रभु प्राण सा ॐ धरो अंतर में

दु:ख को हरे जो श्रेष्ठ मंगल में स्वयम तेज़ जो पाप नाशी परात्मा करे बुद्धि सन्मार्ग गामी सुखात्मा | यह वह मन्त्र है - जिसे प्रत्येक भारतीय जानता है | तो क्या सन्देश देता है! यह जीवनदायी मन्त्र ? मानवता का ही तो ! वास्तव में क्या है भारतीय दर्शन – 'परम सत्ता को पहचानना व् मानना, स्वयं के होने का उदेश्य जानना, और अध्यात्मिक रूप से अपने विवेक के वैशिष्ठ्य को पहचानते हुए स्व एवं विश्व कल्याण के हेतु बनकर जीवन जीना | यही सूत्र है मानवीयता का | भूलना नहीं चाहिए ,िक शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जीवन के लक्ष्य बताये गये हैं | अतः जब लक्ष्य का अंतिम पड़ाव मोक्ष ही है, तो भारतीय मानसिकता को मानवीयता का सूत्र समझने में कोई कठिनाई नहीं ही होती | अतः यह स्वतः ग्रहणीय विषय है | ज्ञान प्राणी को मनुष्य का वास्तविक रूप प्रदान करता है | ज्ञान ही तो उसे मानवता के सोपानों का परिचय कराता है | और इसी ज्ञान को प्रारंभिक अवस्था में ही प्राप्त करके व्यक्ति मानवता के प्रथम और उद्दात आयाम का पाठ पढता है |

महासमर में पितामह भीष्म कुर राजकुमारों की शिक्षा की व्यवस्था की जानकारी लेने के लिए आचार्य कृपाचार्य के पास जातें हैं और उन्हें शिक्षा का मर्म कहते हैं – "क्षत्रिय के लिए शस्त्र-ज्ञान भी आवश्यक है और शस्त्र परिचालन का अभ्यास भी ; किन्तु उससे भी अधिक आवश्यक है ; न्याय और अन्याय का ज्ञान , धर्म और अधर्म का निर्णय | क्षत्रिय का शस्त्र केवल अन्याय के प्रतिरोध में ही उठना चाहिए | क्षत्रिय यदि न्यायालय के निर्णय के बिना शस्त्र-परिचालन का अभ्यस्त हो जायेगा , तो वह दस्यु हो जायेगा।" .वे आगे कहते हैं, "मैं चाहता हूँ कि चाहे वे युद्ध-विद्या सीखें , चाहे क्रीडा में भाग लें, चाहे शास्त्र ज्ञान प्राप्त करें , चाहे प्रतिस्पर्धाओं में व्यस्त रहें ; किन्तु इन सब के माध्यम से वे परस्पर एक-दूसरे के निकट आयें , स्नेह करना सीखें , दूसरे की सुख-सुविधा के लिए त्याग और बलिदान करना सीखें | उनमें स्वार्थ-शुन्यता तथा सहिष्णुता का भी विकास होना चाहिये। अच्छे योद्धा बनने से पहले वे अच्छे मानव बनें उन्हें अपना रक्त देकर प्रजा का पालन करने वाले, अपना सुख-भोग त्याग , निर्बलों की रक्षा करने वाले क्षत्रिय बनाना। । ..."

अत: मानव को मानवीयता का मन्त्र देने वाली शिक्षा कितनी अनिवार्य है, जिससे वह मूल्यों को ग्रहण करता हुआ अपना और समाज का कल्याण और विकास कर सकता है किन्तु वर्तमान कितना द्वन्द पूर्ण है, जो मनुष्य की मानवता वादी विचारधारा से उसको दूर करने की अनवरत कोशिश करता सा दीखता है | आज की सबसे बड़ी समस्या मूल्य संकट की ही समस्या है | मनुष्य के जीवन की चिंताएं, उसकी जीवन- चर्या की नित नई बाधाएं उसे अपने से इतर देखने का समय ही नही देतीं | मनुष्य समाज और परिवार से कटता जा रहा है | उसके अंदर मानवीय सवेंदना का ह्रास होता जा रहा है | भय, अकेलेपन, और सामाजिक विडंबनाओं ने उसके ऊँचे कद को बौना बना दिया है | आज हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर से दूर होते जा रहे हैं | जिसे हमारे पूर्वजों ने ऋषियों, आचार्यों और बौद्धिक जनों से लेकर तैयार किया था और विश्व को ज्ञान का प्रकाश दिया था आज जीवन के नैतिक, अध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि मूल्य जो उसे सुसंस्कृत करते हैं और उसके आचरण को मर्यादित करते हैं, वे शिक्षा के द्वार से मिलते नहीं वरन सर्वथा उपेक्षित हो रहे हैं |

हमें भूलना नहीं चाहिए कि हमारे वेद और उपनिषद हमें मानवीयता की ही शिक्षा देते हैं | वैदिक वाङ्मय में 'सत्य शिवम् सुन्दरम' के अनुसार आदर्श मानवीय मूल्यों की स्थापना के रूप में विश्व के प्रति कल्याण की भावना ही ऋषियों का मुख्य प्रयोजन है | जिसमे विश्व के कल्याण का भाव मुख्य है –

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माँ कश्चिद् दुःख भाग्भावेत ||"......अर्थात मानव मूल्यों की पराकाष्ठा यजुर्वेद के प्रस्तुत मन्त्र में देखने को मिलती है जहाँ वैदिक ऋषि सभी मनुष्य एवं प्राणियों के प्रति अपनी सद्भावना व्यक्त करता है | यही नहीं तेज़ और बल की कामना (तेजो..सी तेजोमय धेहि.... बल मिस बलं मयी धेहि)| बुद्धि को सन्मार्ग की और प्रेरित करने की प्रार्थना (धियो यो न: प्रचोदयात–) |२

एतेव यह तथ्य जाहिर है कि हमारे आदि ग्रन्थ मूल्य-परक नीति एवं आचरण के सच्चे निर्देशक हैं | उदाहरणस्वरुप 'भर्तहरि का नीतिशतक पूर्ण रूप से मानव मूल्यों से परिपूर्ण ग्रन्थ है | नीतिकथाओं, पंचतंत्र तथा हितोपदेश आदि में भी पशु-पक्षियों की मनोरंजक कथाओं के माध्यम से मानव मूल्यों का सरस तथा सरल शैली में वर्णन किया गया है |

श्री मद्भागवत गीता के १६वें अध्याय में भी निर्भयता , अन्तकरण की शुद्धि , ज्ञान और योग की स्थिति , इन्द्रिय दमन , यज्ञ , स्वाध्याय , तप , सरलता , अहिंसा , सत्य, अक्रोध , शांति, अपैशुन, दयाभाव, लोभ रहित, कोमलता, लज्जा , अचंचलता, तेज़, क्षमा , धैर्य, पिवत्रता, द्रोह न करना, अभिमान रहित, आदि दैवी सात्विक गुणों की चर्चा में मानव मूल्यों का सार निहित है । रेवें

मानवीय मूल्यों के अनुसार जीवन जीने का अर्थ यह नहीं है कि कोई मनुष्य कमजोर अथवा निर्बल है वरन दिव्यता तो तब है जब बलवान और योग्य होने पर भी क्षमा और धैर्य आदि मानवीय गुणों का आचरण किया जाए |

महासमर में एक स्थान पर पांडवों के मानवीयता सम्बन्धी गुणों को कहते हुए कृष्ण के शब्द हैं, 'पांडव , उदाहरण है - श्रेष्ठ मानवों का ,उनकी मानवीयता का , जो विकट विरोधी परिस्थितियों में भी अपनी शक्ति का लाभ न उठाते हुए मानवीय गुणों के अनुरूप आचरण कर सकते हैं | ..प्रमाण यह है कि समर्थ होते हुए भी भीम ने अपनी हत्या का प्रयत्न करने वाले दुर्योधन का वध नहीं किया |..... युवराज बन जाने पर भी युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र , दुर्योधन और उसके साथियों को अपदस्थ कर उनकी हत्या करना तो दूर , उन्हें तिनक-सी क्षिति पहुँचाने का भी कोई प्रयत्न नहीं किया | द्रुपद को पराजित कर भी पांडवों ने उनका राज्य छीनने अथवा उनसे किसी प्रकार का लाभ उठाने की चेष्ठा नहीं की | वारणावत जाने के संकट को जानते हुए भी अपने पित्रव्य की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया | काम्पिलय और हस्तिनापुर में अवसर मिलने पर भी वारणावत कांड का प्रतिशोध लेने का प्रयत्न नहीं किया | कुरु-राज्य के बंटवारे के नाम पर खांडवप्रस्थ पाकर भी न विरोध किया, न लोभ दिखाया | द्रौपदी जैसी स्त्री पाकर भी अर्जुन का धर्म विरुद्ध काम नहीं जागा | राजा और भाई के क्षमा

करने पर भी वह प्रतिज्ञा के अनुसार बारह वर्षों के लिए इंद्रप्रस्थ छोड़ आया | इतनी विकट परिस्थितयों में , प्राणों का भय रहने पर भी ,जिन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा , वे कायर नहीं हो सकते ।"४

व्यक्ति अधिकांशत: पद , प्रतिष्ठा , धन , समृद्धि के पीछे अपने मानवीय मूल्यों की बलि चढ़ा देता है | आश्चर्य है ! सुख सुविधाएँ कितनी महत्वपूर्ण हो जाती हैं जीवन के लिए कि प्रतिभा और योग्यता का मूल्य नगण्य हो जाता है |

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ् के समय श्री कृष्ण को महर्षि वेदव्यास और युधिष्ठिर, तंत्र स्वामी बनाना चाहते थे परन्तु कृष्ण कहते हैं, "यह सम्मान आप कुलवृद्ध पितामह भीष्म को तथा आचार्य द्रोण को दें |....और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरी इच्च्छा है कि आप मुझे विद्वान् ब्राह्मणों और विप्रों के चरण पखारने का कार्य दें |" युधिष्ठिर अवाक हैं 'विप्रों के चरण धोना चाहते हैं !....अहंकार का ऐसा विगलन | विनय की ऐसी चरमावस्था | कृष्ण मनुष्य नहीं हैं मानवीय सीमाओं और दुर्बलताओं पर ऐसी विजय कोई मनुष्य पा सकता है क्या ?....' ईश्वर अपने साकार रूप से मानव को मानवता का कौन सा पाठ पढ़ाना चाहते हैं, समझना कहीं असंभव है क्या ? और संभव भी है क्या? किसे कहते हैं मानवीय मुल्य?

कृष्ण अपने जीवन से मानवता का उच्चतम उदाहरण देते हैं- व्यक्ति कैसे जिए ? उसके आदर्श कैसे हों ? क्षमा और पुरस्कार किसे और कैसे मिले ! यह सब उदाहरण उनके एक-एक कार्य में परिलक्षित होता है | महान ग्रन्थ गीता जीवन का दर्शन है, जिसे मानव यदि समझ ले तो मुल्यों को समझने और आचरण में उतारने की कोई चेष्टा करने की आवश्यकता ही न रहेगी |

डॉ.नरेन्द्र कोहली ने श्रीकृष्ण के जीवन पर एक उपन्यास रचा है,'अभिज्ञान',जिसमें मानवता की उद्दातता का एक उद्धरण है, कृष्ण कहते हैं,"बड़ा आदमी वह होता है जो अपनी पशु-वृतियों को त्याग सके और अपनी साधना, त्याग तथा तपस्या से मानव-जाति के कल्याण के लिए कोई मार्ग निकल सके।"५

मानव और मानव की मानवीयता सदैव ही मनुष्य को देवत्व की ऊँचाइयों पर ले जाती है | डॉ. कोहली के ही एक ओर उपन्यास 'तोड़ो करा तोड़ो' में जो उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर रचा है , उसमें वह कहते हैं कि , "मानवीय क्षमता की कोई सीमा नही ।"६

लेखक डेविड.जे.पॉल अपना एक अनुभव बताते हैं , 'एक बार मैं और मेरी पत्नी अपनी बेटियों के एरिला और इलायना को लेकर तितिलयों के संग्राहलय पहुंचे | जब हम म्यूजियम पहुंचे तो हम वहां हजारों तितिलयों से घिरे हुए थे | सभी अपने बहुरंगी पंखों को फडफडा रहीं थीं | मेरी बेटियां रोमांचित थीं | मैंने म्युजियम गाईड से पूछा , तितिलयाँ कितने वक़्त तक जिन्दा रहती हैं | उसने जवाब दिया, दस दिन तक | मैंने तुरंत कहा, तितिलयां दस दिन में क्या कर सकती हैं | मेरी छोटी बेटी रुक गयी , चुपचाप कुछ पल के बाद उसने कहा , वे दुनिया को खुबसूरत जगह बना देती हैं | अब हर दिन मैं अपने आप से पूछता हूँ , मैं किस तरह दुनिया को खुबसूरत जगह बना रहा हूँ ? एक लंबी जिन्दगी अच्छी है , लेकिन श्रेष्ठ जिन्दगी बेहतर है |' क्या खूब प्रेरक प्रसंग है जीवन को उपयोगी-सदोप्योगी बनाने की दिशा देने वाला !रोमन दार्शनिक सेनेका ने एक बार कहा था कि 'जीवन एक नाटक की तरह है, जिसकी लम्बाई नहीं अभिनय की श्रेष्ठता महत्वपूर्ण होती है| 'यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया की प्रोफेसर सोंजा ल्युबोमिरसकी की रिसर्च बताती है कि 'श्रेष्ठ जिन्दगी संभव है और इसका मापन आपके द्वारा जिये गये सालों से नहीं होता | बल्कि उन गुणों पर निर्भर करता है , जिनका इस्तेमाल अपने जीवन में किया है ।'

मानवीयता के उदाहरण यत्र तत्र बिखरे मिल जाते हैं , जिससे जीवन की सुन्दरता बनी रहती है और कल्याण का मार्ग गतिवान रहता है , अवरुद्ध नहीं होता | जीवन हमें कई अवसर देता है और साथ ही देता है कार्य करने की शक्ति| अब चुनाव स्वयं करना है कि कार्य सकारात्मक है या नकारात्मक | स्वार्थमय है या परमार्थमय |

परमार्थ मानवीयता का मुख्य सिद्धांत है | शास्त्रों से भी यही ज्ञान प्रवाहित हो रहा है कि जीवन प्रवाह वसुधैव कुटुम्बकम की मूल अवधारणा के अनुसार ही बहे तो उत्तम है |

अमित नरों के दुःख को ।"८

जीवन का मूल्य व्यष्टि से समष्टि कल्याण है | जिसके बिना जीव की कल्पना संभव नहीं | अत: मानवतादर्श को हम प्रमुख जीवन मूल्य की संज्ञा दे सकते हैं | मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य साकेत में राम और सीता दोनों ही मानवतावादी दृष्टि के व्यंजक पात्र हैं | राम तो मानव में दैवी सत्ता की प्रतिष्ठा का आदर्श लेकर आये हैं:

> "भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया | सन्देश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया, इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ||"९

वास्तव में साकेत एक ऐसा महाकाव्य है जिसमे मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी रचना के द्वारा जीवन में उन्हीं तत्वों की महत्ता ज्ञापित की है जिनसे मानव का मानव के प्रति सद्भाव बना रहे | उनका मत है कि मानवता की रक्षार्थ यदि जीवन भी आवश्यक हो तो आहुत कर देना चाहिए | विश्व हित तभी संभव हो सकता है जबकि :-

> " मनुजता की रक्षा के हेतु, निछावर कर दे अपने प्राण | जगायेगा जन जन में भरी , मनुजता को जो मनुज महान विश्व-रक्षा हित उसमें शक्ति भरेंगे विश्वंभर भगवान |।"१०

मानवीयता और किसे कहते हैं , न केवल शास्त्र , वरन हमारा साहित्य , हमारे मूर्धन्य रचनाधर्मी अपने शब्दों से निरंतर यही सन्देश देते हैं |

अगर चाहें तो यत्र-तत्र सर्वत्र ऐसे प्रेरक प्रसंग जीवन की सार्थकता को कहते और प्रमाणिक करते प्रसंग मिल जातें हैं , केवल विचार को ही प्रेरित करने की आवश्यकता है | किन्तु वर्तमान समाज जिस तरह नेकी और मानवता के प्रसंगों से आगाह करता है, वैसे ही कई विद्वपताओं को भी अपने में समेटे है |

आज क्या दशा हो गयी है मनुष्यता की ? किस रिश्ते पर व्यक्ति भरोसा करेगा ? धन सम्पदा मानवता की धिज्जियाँ उड़ाते से लगते हैं | आसुरी वृतियां अपने चरम पर हैं | स्वार्थ ने मनुष्यता के आकाश पर ग्रहण की छाया कर दी है | लेकिन जीवन की सकारात्मकता मनुष्य को उसकी आशा से पृथक नहीं होने देती | व्यक्ति कितना भी दुखी हो, मरना नहीं चाहता |

मानव मूल्य कभी समाप्त नहीं हो सकते, हाँ कहीं कहीं इसका विद्रूप रूप दीखता है, परन्तु जीवन में देव और दानव दोनों का अंश बना रहता ही है | वर्तमान को कोई कितना भी किलयुग के नाम पर कोस ले परन्तु इसी समाज के ही उदाहरण हैं जो मानवता की पौध को सूखने नहीं देते | सत्य तो यही है – मानव यदि सम्पूर्ण जगत के प्रति प्रेम व् सेवा भाव से भर जाये, कल्याण के लिए जुट जाये, व्यष्टि में समष्टि का और समष्टि में व्यष्टि का विलय हो जाये. तो और मानवता क्या है ?

इसी वर्ष २०१७ अगस्त माह में मुंबई में तबाही की सीमा तक बारिश हुई | कई लोग जहाँ थे वहीँ फंस गये| अपने कार्यालय से घर के लिए निकले लोग घर न पहुँच कर रास्तों में ही बंधे रह गये | घरों में पानी भर गया | .. 'शहर की लाइफ लाइन उपनगरीय ट्रेने बंद हो गयीं | सड़कों पर पानी भर गया | अस्पतालों तक में पानी भर गया और लोगों को कमर तक पानी का सामना करना पड़ा |' कितना भयावह है | यह सोचना ही कि कब अपने गंतव्य पर पहुंचेंगे ? और पहुंचेंगे भी या नहीं ? ऐसी भयानक प्राकृतिक आपदा के समय ,... 'लोगों ने अपने दिल और घरों के दरवाजे यहाँ वहां फंसे लोगों के लिए खोल दिए | अपने टॉयलेट इस्तेमाल करने की इजाजत दी और गर्म चाय लोगों को पिलाई | न्यायलयों में कोर्ट रूम लोगों के ठहरने के लिए खोल दिए गये | रेलवे स्टेशनों ने अनाज के आखिरी दाने तक लोगों को फूड सर्व किया | यहाँ तक कि कोई चार्ज तक नहीं लिया | मंदिरों , गुरद्वारों और मस्जिदों के दरवाजे सभी के आश्रय के लिए खोल दिए गये | रेश

जब जिसे आवशयकता हो उस समय पहुंचाई गयी सहायता ही मानवता की द्योतक है | मनुष्य को, अपना श्रम, अपना कर्म दोनों ही बिना स्वेद बहाए उच्च चेतना की और नहीं ले जा सकता | मानव में मानव बनने के गुण उसकी शिक्षा के साथ ही आरंभ हो जाते हैं | स्वयं की और दूसरों की रक्षा, सम्मान और प्रतिष्ठा का ज्ञान महापुरुष बनने में सहायक होता है, यदि शैशव से ही शिक्षा के साथ-साथ मिल जाये |

सृष्टि प्रकृति और पुरुष – दो भागों से मिल कर बनी है | पुरुष की वृति है स्वार्थ और प्रकृति की वृति है परमार्थ | स्वार्थ को गला कर परमार्थ की राह पर चलना तप है | ऐसा भाव करना कि जीवन का ध्येय पर-उपकार ही है , अपने मन की मलिनता से ऊपर उठकर

क्षमा करना और जो कष्ट देते हैं , उन्हें स्नेह देना और उनका भला करना , अपने आप में एक तपस्या ही तो है | प्रकृति अपने शांत अस्तित्व से शब्दहीन होकर यही सन्देश मनुष्य को निरंतरता से देती आ रही है -

"तरबर तास बिलबीय , बारह मॉस फलन्त ।

सीतल छाया गहर फल, पंशी केलि करंत ||" १२ वृक्ष का सेवा कार्य बारह मॉस अनवरत चलता है | प्रति एक के लिए छाया , फल, पंछियों के लिए बसेरा बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध होता है | सम्पूर्ण प्रकृति मानवीयता का सन्देश प्रतिक्षण अपने मूक कार्यों से दे रही है | धर्म ,अर्थ, काम, मोक्ष की चरमावस्था स्वयं को ही तो पाना है , मन को ही तो जीतना है | श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में गुरु नानक देव जी द्वारा रचित जपुजी साहेब की २८ पौड़ी में उधृत किया है , 'मन जीते जग जीत' |

'मन के इस रूप के विषय में भी यजुर्वेद में उल्लेख है – "येन कर्मायपसो मनीषिणी यज्ञे क्रिरायान्ति विदथेष धीरा: यद्पूर्व यक्षमंत: प्रजानां तन्मे मन: श्व संकल्पमस्तु ॥" १३

जीवन के मूल्यों में मानवीयता का स्थान सर्वोपिर है | राष्ट्र के संत , भक्त, महान बुद्धिजीवी इसी तथ्य का अनुमोदन करते हैं | संत कबीर का तो समस्त जीवन ही मानवीयता का दर्पण है | कबीर दर्शन पर डॉ.रामजीलाल 'सहायक' की पुस्तक में शुभ कामना देते हुए तत्कालीन (१९६१) मुख्यमंत्री (उत्तरप्रदेश) श्री चन्द्रभानुगुप्त ने मानवता विषयक अपने उद्गारों को इस प्रकार उद्घाटित किया , "पूर्ण विश्व की सभी हलचलों का एकत्व , मानव के पावन और पिरेशुद्ध रूप का स्थापत्य , समाज के सर्वोत्कृष्ट कल्याणमय स्वरुप का निर्माण तथा समाज के कल्याण के लिए निष्काम भाव से कर्म करने का महत्त्व संपादन | क्या ज्ञान , क्या योग , क्या भक्ति और क्या कर्मयोग, इन सभी साधना-मार्गों का उद्देश्य है-मानव को सच्चा मानव बनाना , स्वकर्तव्य में निष्काम भाव से लगे रहना तथा उसे अपने सत्य स्वरूप को पहचानने में समर्थ बनाना | निष्काम भाव से सर्विहित के कार्यों में लगे रहने से ही मानव को अपने सत्य , नित्य , मुक्त स्वरुप के दर्शन हो सकते हैं |" ।" ।"

उपसंहार:

सामयिक दृष्टि से वर्तमान के परिदृश्य बदल रहे हैं | मानव कहीं बेहद मानवीय होकर संवेदनशील हो गया है और कहीं स्वार्थी होकर घोर किलयुग का वहन करता है । १५ समय की पुकार है , सत्य युग विचार में है , आचार में है , शिवम् में है ,सुन्दरम में है और यही सत्य है | कोई भी युग अपने आचरण से आकार लेता है | फिर क्यों न मानवीयता को कूट कूट के मनुष्य में भर कर ऐसे संसार की परिकल्पना और सरंचना का प्रयास करें | हमें तो उदाहरणों की भी आवशयकता नहीं हमारे ग्रन्थ , संत ,पूर्वज ऐसी विरासत दे गये हैं कि केवल पदिचन्हों पर चलने का कार्य बाकी है |

सन्दर्भ सूची:

```
नरेंद्र कोहली, महासमर खंड २ : अधिकार ,पृष्ठ ४३ | ऋग्वेद -३.६२.१० | डॉ.राजकुमार महाजन,लेख: संकलन:संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य,पृष्ठ १९ | नरेंद्र कोहली, महासमर खंड ४ : धर्म , पृष्ठ १९८ | नरेंद्र कोहली, अभिज्ञान,पृष्ठ ९१ | नरेंद्र कोहली, अभिज्ञान,पृष्ठ ९१ | नरेंद्र कोहली, तोड़ो करा तोड़ो,खंड १, निर्माण,पृष्ठ १९१ | लेख: श्रेष्ठ्ता के सूत्र: आहा जिन्दगी पत्रिका: सितम्बर २००९ अंक , पृष्ठ २१ | रामधारी सिंह दिनकर,कुरुक्षेत्र,सप्तम सर्ग ,पृष्ठ ८९ | मैथिलीशरण गुप्त,साकेत: अष्ठम सर्ग ,पृष्ठ ३३४,३३५, | मैथिलीशरण गुप्त,साकेत: द्वादश सर्ग :पृष्ठ २८ | एन.रघुरामन.,'देने की प्रवृति से अमीर बनता है आपका शहर',दैनिक भास्कर समाचार पत्र ,३१ अगस्त २०१७ अंक )| कबीर ग्रंथावली , पृष्ठ १९६ | (यर्जुवेद ३४/२) रामजीलाल सहायक, कबीर दर्शन,पृष्ठ ११ | लेख- एक मृट्टी चांदनी संजोती आधी दुनिया ,आहा जिन्दगी पत्रिका, मार्च २०१२ अंक, पृष्ठ २० |
```



मंजू अरोरा अनुसंधित्सु कला एवं भाषा विभाग,लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी , फगवाड़ा, पंजाब.
